दिव्य दर्शनीय स्वरूप कैसे बनें...

हे! देवी-देवता कुल की आत्माओं... जागृत हों...

राजयोगिनी ब्र.कु. उषा बहन, वरिष्ठ राजयोग प्रशिक्षिका

- गतांक से आगे...

जैसा कि पिछले अंक में आपने पढ़ा कि उस समय हर आत्मा जैसे वहाँ पर भी देखा कि एक राम मन्दिर बनने के बाद कई लोगों की आँखों में आंसू थे, झर-झर रो रहे थे। तो लगा कि जब बाबा की प्रत्यक्षता होगी तो आत्मायें झर-झर रोयेंगी। किसी के अन्दर खुशी के आंसू होंगे तो किसी के अन्दर पश्चाताप के आंसू होंगे, कि हमने पहचाना नहीं। तो एक बहुत अद्भुत अनुभूति थी वो, कि कैसे बाबा की प्रत्यक्षता होगी और हम सब आत्मायें निमित्त बनेंगी। वो दिव्य दर्शनीय मूर्त द्वारा साक्षात्कार कराने के लिए। अब आगे पढ़ेंगे... इसीलिए बाबा अपना कार्य किस तरह से कर रहा है और समय किस तरह से तीव्र गति से आगे बढ़ रहा है, ये दृश्य देखने के बाद लगा कि अब ज़्यादा समय नहीं है। यही महसूस हो रहा था। कई बार कई भाई-बहनें सोचते हैं कि हम तो गाँव में रहते हैं, हम कैसे बाबा की प्रत्यक्षता के लिए निमित्त बनेंगे! तो महसूसता ये हो रही थी कि इस बार जब 2024 आरम्भ हुआ तो पहली तारीख को ये बताया गया कि दुनिया की आबादी आठ सौ करोड़ हो गई। और त्रेतायुग के देवताएं कितने होते हैं? 33 करोड़ होते हैं। तो 33 करोड़ देवतायें 800 करोड़ को अनुभूति नहीं करायेंगे क्या? हरेक बाबा का बच्चा यानी त्रेतायुग के अन्त तक की आत्मायें जो 33 करोड़ हैं वो 800 करोड़ में किसी न किसी की तो ईष्ट होगी या नहीं होगी?

आज भी अगर गाँव में जाओ तो किसी से भी पूछो कि आपका कुल देवी या कुल देवता कौन है? तो हरेक के, हरेक समाज के यहाँ एक परिवार के कुल देवी, कुल देवता कहा जाता है। तो हरेक कुल के देवी या देवता अलग-अलग होते हैं। तो सोचो कि ये 33 करोड़ आत्मायें 800 करोड़ आत्माओं के कुल देवी या कुल देवता होंगे या नहीं होंगे! चाहे गाँव में रहने वाला होगा वो भी। किसी न किसी का तो होगा। होता ही है। तो इसीलिए बाबा कहते कि कम से कम आपके उस कुल वाले, उस समाज वाले के लिए आप दर्शनीय मूर्त तो बनो। और उनको साक्षात्कार कराओ। वो पुकार रहे हैं। और आह्वान कर रहे हैं कि हमारे कुल देवी और कुल देवता आकर हमारा उद्धार करें। तभी तो द्वापर से लेकर कलियुग तक कुल देवी और कुल देवताओं का गायन हुआ। वो ऐसे थोड़े ही हुआ है। तो इसीलिए ये मत समझना कि हम गाँव में रहते हैं, हम किसके देवता होंगे, किसके इष्ट होंगे, अरे आप भी किसी न किसी के इष्ट या देवी-देवता हैं ही हैं। और इसीलिए आपको अपने भक्तों को, अपने उन कुल वाली आत्माओं को वंचित नहीं रखना है। नहीं तो वो आपको उल्हना ज़रूर देंगी। तो इसीलिए हे कुल देवी, कुल देवता, तो ऐसे कुल देवी, कुल देवताओं को क्या करना है? जागृत होना है। अब सम्पूर्णता की ओर, अपने दिव्य दर्शनीय मूर्त द्वारा अनेकों को अनुभव कराना है। और तभी तो वो गायन करेंगे कि वो हमारे बाबा आ गये।

आपको अपने भक्तों को, अपने कुल वाली आत्माओं को वंचित नहीं रखना है। नहीं तो वो आपको उल्हना ज़रूर देंगी। तो इसीलिए हे कुल देवी, कुल देवता, ऐसे कुल देवी, कुल देवताओं को क्या करना है? जागृत होना है।

तो आपको परमात्म प्रत्यक्षता अपनी सूरत और मूरत के द्वारा ज़रूर करानी है। तो दिव्य दर्शनीय मूर्त कौन बन सकता है? कौन बनेगा? सबसे पहली बात दिव्य दर्शनीय मूर्त माना कभी-कभी बाबा मुरली में कहते रहे कि बाबा पर्दा उठाये? बाबा पर्दा उठाये? तो जब बाबा कहते कि पर्दा उठायें तो माना मूर्ति तैयार होनी चाहिए। खंडित मूर्ति का तो दर्शन नहीं होता। तो मूर्ति तैयार चाहिए। मूर्ति तैयार कैसे होगी? मूर्ति होगी माना सम्पूर्ण श्रृंगारी हुई मूर्ति होगी। सोलह कला सम्पूर्ण जब बनना है तो सोलह श्रृंगार को भी धारण करना है। बाबा कई बार हम बच्चों को कहते रहे हैं कि बाबा ने हम सभी बच्चों को अलग-अलग गुणों के सैट दिए हैं, वो सैट पहनकर अलग-अलग स्वरूप, अपना दर्शन तो कराओ अपने भक्तों को। कभी सन्तुष्टता का सैट धारण करो, कभी प्रसन्नता का, तो कभी शांति का। अलग-अलग सैट को धारण कर उनको अनुभव कराना है। कोई भी उल्हाना न दे कि हमारे कुल देवी और कुल देवता तो अपने में ही व्यस्त रहे। और हमें अनुभव भी नहीं कराये। तो ऐसा उल्हना तो नहीं मिलना चाहिए ना। इसीलिए श्रृंगारी हुई मूर्त बनकर अनुभव कराना है। सोलह श्रृंगार, सोलह कला सम्पूर्ण होकर वो स्वरूप अपना तैयार करना है।

- क्रमशः

परमात्म ऊर्जा

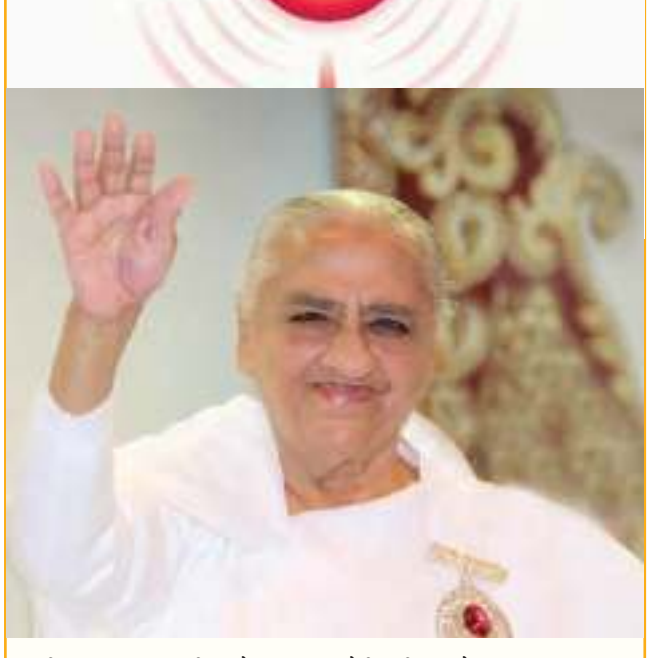

किले की मजबूती होती है एक-दो के संगठन से। अगर किले की दीवार में एक भी ईंट व पत्थर का सहयोग पूरा ना हो तो वह किला सेफ नहीं हो सकता। ज़रा भी हिला तो कमज़ोरी आ जाएगी। भले कहने में तो एक ईंट की कमी है लेकिन कमज़ोरी चारों ओर फैलती है। तो वैसे ही मजबूती के लिए तीन बातें बहुत ज़रूरी हैं। फिर कोई वायब्रेशन भी टच नहीं कर सकता। अपने ऊपर अटेन्शन कम है। जैसे साकार बाप साकार रूप में लाइट हाउस, माइट हाउस दूर से ही दिखाई देते थे, ऐसे रूहानियत की मजबूती होने से कोई भी अन्दर आएंगे तो लाइट हाउस, माइट हाउस का अनुभव करेंगे। जैसे स्नेह और स्वच्छता बाहर के रूप में दिखाई देती है, वैसे ही रूहानियत व अलौकिकता बाहर रीति से प्रत्यक्ष दिखाई दे, तब जय-जयकार होगी। ड्रामा प्रमाण जो भी कुछ चल रहा है उसको यथार्थ तो कहेंगे ही लेकिन साथ-साथ शक्ति रूप का भी अनुभव होना चाहिए। यह अलौकिकता ज़रूर होनी चाहिए। यह स्थान अन्य स्थानों से भिन्न है। स्वच्छता व स्नेह तो दुनिया में भी अल्पकाल का मिलता है लेकिन रूहानियत कम है। यह ईश्वरीय कार्य चल रहा है, कोई साधारण बात नहीं है- यह अनुभव यहाँ आकर करना चाहिए। वह तब होगा जब अपने अलौकिक नशे में रहकर के निशाना लगाएंगे।

कथा सरिता

एक समय की बात है, एक गरीब किसान का बेटा था जिसका नाम सचिन था। सचिन एक दयालु और अच्छा लड़का था। वह हमेशा दूसरों की मदद करने के लिए तैयार रहता था। एक दिन सचिन जंगल में घूम रहा था जब उसने देखा कि एक पेड़ सूख रहा है।

पेड़ ने सचिन से कहा,"मुझे पानी दो। मैं मर रहा हूँ।" सचिन को पेड़ पर दया आ गई। उसने अपने गले में एक कलशी बांध लिया और पेड़ को पानी देने लगा। वह कई दिनों तक पेड़ को पानी देता रहा। आखिरकार, पेड़ को पानी मिल गया और वह ठीक हो गया।

सचिन को पेड़ पर बहुत खुशी हुई। उसने सोचा कि अगर वह एक पेड़ को बचा सकता है, तो वह कई पेड़ों को बचा सकता है। इसलिए, सचिन ने जंगल में एक पेड़ लगाने का फैसला किया। उसने एक छोटा-सा पेड़ लगाया और उसे पानी दिया।

सचिन ने हर दिन पेड़ की देखभाल की। उसने उसे पानी दिया, उसे खाद दी और उसे कीटों से बचाया। धीरे-धीरे, पेड़ बड़ा और मजबूत हो गया।

सचिन ने एक और पेड़ लगाया, फिर दूसरा, फिर तीसरा। उसने जंगल में कई पेड़ लगाए। सचिन के प्रयासों से जंगल फिर से हरा-भरा हो गया।

सचिन के बारे में जल्द ही सभी को पता चल गया। लोग उसे पेड़ लगाने वाला लड़का कहने लगे। सचिन को अपने काम पर बहुत गर्व हुआ। वह जानता था कि वह दुनिया को बेहतर जगह बना रहा है। एक दिन, एक राजकुमार जंगल में घूम रहा था।

उसने सचिन को पेड़ लगाते हुए देखा। राजकुमार सचिन की मेहनत और समर्पण पर बहुत खुश हुआ। उसने सचिन को एक पुरस्कार दिया और उसे जंगल का रक्षक नियुक्त किया। सचिन ने जंगल का रक्षक बनने के बाद भी पेड़ लगाना जारी रखा। उसने जंगल में कई और पेड़ लगाए। सचिन के प्रयासों से जंगल एक सुरक्षित और स्वस्थ जगह बन गई।

सीखः छोटी-छोटी चीज़ें भी बड़ा बदलाव ला सकती हैं। अगर हम सभी सचिन की तरह पेड़ लगाने का काम करें, तो हम दुनिया को एक बेहतर जगह बना सकते हैं।

छोटी-छोटी चीज़ों से बड़ा बदलाव

ढिगावा मंडी-हरियाणा। गांव द्वारका के वार्षिक मसानी माता मेले में ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा लगाई गई प्रदर्शनी एवं झाँकी का अवलोकन करने के पश्चात् पूर्व विधायक सुखविंदर मांढी को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. शकुंतला बहन। साथ हैं ब्र.कु. पूनम बहन तथा अन्य।

फतेहाबाद-हरियाणा। 'घर बने एक मंदिर' कार्यक्रम का दीप प्रज्वलित कर शुभारंभ करने के पश्चात् समूह चित्र में बहन स्वतंत्रबाला चौधरी, पूर्व विधायक, बहन सविता टुटेजा, उपप्रधान, नगर परिषद, ब्र.कु. गीता बहन, सेवाकेंद्र संचालिका ब्र.कु. मोहिनी दीदी तथा अन्य।